भारत में भित्त चित्र परम्परा

डॉ0 सुनीता शर्मा,

असिस्टेंट प्रोफेसर–ललित कला विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

भारत में भित्ति चित्र अंकन की परम्परा बहुत प्राचीन है। इसके सर्वप्रथम दर्शन अजन्ता के गुफा मन्दिरों एवं चैत्यों में सुलभ होते है। अजन्ता का अंकन बहुत सुन्दर तरीके से किया गया है। अजन्ता में रंगों का संयोजन, विषयों का चुनाव, चित्रों का अंकन बहुत तरीके से किया गया है। यह चित्र दूसरी सदी प्रारम्भ होकर सातवी सदी तक निरन्तर बनते रहे है, प्राचीन भारतीय चित्रकला जगत में अजन्ता की चित्रकला एक जननी या प्रेरणा–स्वरूप प्रतीत होती है। जिसने अपनी समकालीन तथा परवर्ती सभी कालाओं को प्रेरित किया तथा अनायास ही अपनी कला–वैचि®य उनमें समाहित करती रही। अजन्ता के चित्र ही भारतीय चित्रकला में दो सागर है जिसमें दीवारों से लेकर स्तम्भों व छत तक अंकित विश्व जीवन का प्रत्येक पहलू हमें अपनी कला–तरंगों में उद्धेलित करता है, तथा जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो विचार जन्म लेते ही थम गये हो। बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं को अंकित किया गया है बुद्ध यहाँ साधारण मानव है जो अपने श्रेष्ठ कर्मो तथा विचारों से महान है, परन्तु दैवी चमत्कारी व काल्पनिक दृष्यों से परे हैं। अजन्ता की गुफाओं के भीतरी दीवारों, स्तम्भों तथा अन्तराच्छादनों पर बने चित्रों को देखने से एक ऐसे नाटक का रूप हमारे सामने आता है, जिसमें राजा से रंक तथा साधु सन्यासी, सेठ–साहूकार, नागरिक तथा ग्रामीण वन्य पशु तथा पालतु पशु, विभिन्न रूचियों के लोग, देशी–विदेशी सभी ने भाग लिया। धावलिकर कहना है कि अजन्ता के चित्रों में महात्मा बुद्ध का अंकत करते हुए कुश्ल चित्रकार तत्कालीन जीवन का रंगमय चित्र प्रस्तुत करता है।

अजन्ता

इस प्रकार अजन्ता के चित्रों में हमें वाकाटक व गुप्त कालीन सामाजिक जीवन का प्रतिबिम्ब मिलता है। इनके स्वभाव, रूचियों में आए परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रमाण अजन्ता के चित्र है, जिनकी पुष्टि हमें समकालीन साहित्य से मिलती है या फिर जैसा कि प0 जवाहर लाल नेहरू अपनी पुस्तक ''Discovery of India'' में लिखते है कि ''Ajanta takes us back into some distant like but a very real world.''

अजन्ता के चित्र कलाकार की कला का कल्पना का समाज का या चित्रकार के कला–समाज का दर्शन है। यह अति अनूठा है, अद्भूत है, गहरा है, जी भी है। अजन्ता शैली की समृद्ध परम्परा का निर्वाह करने वाली पहाड़ी चित्रकला के महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। पहाड़ी चित्रकला अपने सौन्दर्य–बोध एक अध्यात्मिकता के साथ भारतीय कला–इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पश्चिमी हिमालय की सुरमय घाटी में जिस उन्नत परम्परागत भारतीय भित्ति चित्रों का विकास हुआ उससे कला जगत के दृष्टिकोण पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ा।

पहाड़ी

समस्त पश्चिमी हिमालय में कलात्मक धरोहर के रूप में भित्तिचित्रों का अनुराग वैभव है। विशुद्ध हिन्दू शैली पर आधारित देवी–देवताओं के भव्य चित्र बने है विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पक्ष इन सभी का सम्यक प्रतिनिधित्व इन भित्तिचित्रों के हुआ है। पहाड़ी क्षेत्रों में वर्तमान भित्तिचित्रों की थाती के रूप में मुख्यतः नूरपुर डमटाल, तीरा सुजानपुर, नंदीण, मण्डी, कूल्लू, आर्की एवं चम्बा के भित्तिचित्र विशेष उल्लेखनीय है। नूरपुर राज्य भित्तिचित्र लगभग 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 19वीं शताब्दी के पूवार्ध तक प्राप्त होते है। सुजानपुर संसार चन्द की राजधानी रही है। यहाँ प्राप्त भित्तिचित्रों में नर्मदेश्वर मन्दिर और गौरीशंकर मन्दिर के विषयांकन जीवंत है। भित्तिचित्र पद्धति की दृष्टि से हिमाचल के जो अन्य विशेष समृद्ध है। इनमें चम्बा कूल्लू की गणना विशेष रूप से की जाती है। कूल्लू में बने शीश–महल के भित्तिचित्र का प्रमुख विषय देवी त्रिपुरा सुन्दरी है, आर्की–दीवानखाने में बने भित्तिचित्र राजा किशन सिंह की रूचि–अनुकूल कांगड़ा प्रभाव को पुष्ट करते है। जम्मू के रियासी, रामनगर, परमण्डल, सुई सिम्बाली और नगर जम्मू में बने भित्तचित्र विशेष महत्व के है। हिमाचल प्रदेश की मनोरम व शान्त घाटियों में समृद्ध भित्तिचित्र सुरक्षा के अभाव में क्षतिग्रस्त होकर सुप्त हो रहे हैं।

बनारस

समस्त भारतीय कलाओं का आधार आनन्द है। लोककला की जड़े लोक समाज में गहराई से घुसी रहती है और अवसर पाते ही लहलहा उठती है। बनारस की लोककला (भित्तिचित्र) हो या अन्य स्थान की, भाव की गहनता ही उसकी विशेषता है। बनारस के जीवन रस में अमृतधारा गंगा के अतिरिक्त वरूणा एवं अस्सी की जल धाराओं का भी समन्वय हुआ है। मस्ती यहाँ के लोक–जीवन की अपनी विशेषता रही है। मेला–दशहरा, तीज–त्यौहार तथा विवाह उत्सवों पर अपने घरों को विभिन्न प्रकार के भित्तिचित्रों से सजाने की प्रथा यत्र–तत्र देखी जा सकती है। यहाँ दरवाजे पर शस्त्रधारी द्वारपाल, केले का वृक्ष, गणेश, बेलबूटे, हाथी, मयूर–घुड़सवार इत्यादि बने हुये भित्तिचित्र अपने परम्परागत वैभव को आज भी जीवित रखे हुये है।

पहले यहाँ भित्तिचित्रों का निर्माण, व्यक्ति स्वयं किया करते थे। बाद में व्यावसायिकता की गति के साथ अनपढ़ लेकिन कुशल हाथों तक सीमित रह गया। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी भित्ति–चित्र ग्रामीण स्वयं बनाते है। बनारस में इन चित्रों को तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है। (1) विवाह आदि उत्सवों पर बनने वाले भित्तिचित्रों (2) धार्मिक विषयों से सम्बन्धित चित्र (3) स्वतन्त्र विषयों से सम्बन्धित चित्र। ये भित्तिचित्र प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बनारस की परम्पराओं से सम्बन्धित है। ग्रामीण शहरी बनारस क्षेत्रों में बने हुये मन्दिरों की दीवारें खाली नहीं दिखायी देती है। कुछ न कुछ उन पर अवश्य चित्रित रहता है। धार्मिक विषयों पर या कथाओं पर आधारित रहते है तथा कुछ स्वतंत्र रूप से चित्रित हुये हैं। कथाओं पर देवताओं पर आधारित तथा स्वतन्त्र रूप में शिवलिंग, सर्प, शंख, गदा, कमल, कलश, नारियल, स्वास्तिक आदि चित्र मिलते है। यद्यपि इनका पौराणिक सम्बन्ध नहीं है। किन्तु धार्मिक रीतिरिवाजों में इनका अटूट सम्बन्ध है। स्त्री–पुरूषों के चित्रों में राजस्थानी कला की अमिट छाप है। कहीं–कहीं तो चित्रों को देखकर यह भ्रम होने लगता है कि यह बनारस के भित्तिचित्र है या राजस्थानी चित्र।

बनारस के अनेक शहरी क्षेत्रों में बने भित्तिचित्रों का निरीक्षण करने से विदित होता है कि कुछ कलाकार रंगों को एक दूसरे में मिलाकर

पारदर्शी आभा उत्पन्न करने का प्रयास किया है। रामनगर किले की दीवारों पर बने अनेक भित्तिचित्रों में पारदर्शी टेम्परा पद्धति का प्रयोग किया गया है।

बनारस के भित्तिचित्रों पर आधुनिकता की छाप है। जल रंग की जगह तैल का इस्तेमाल होने लगा, निश्चय ही बनारस के परम्परागत भित्तिचित्रों के लिये ठीक नहीं है। कुछ भित्तिचित्र बहुत सुन्दर है तथा कुछ भौंड़े है। यहाँ के प्रत्येक चित्र लोक जीवन से सम्बन्धित है। कुछ लोगों ने बनारस के भित्तिचित्रों को राजस्थानी प्रभाव के साथ–साथ स्थानीय प्रभाव की भी चर्चा की वे बनारसी जनजीवन के कला–प्रभाव को बनारसी कला कहते है। जो प्रभाव बनारस के लघु–चित्रों में दृष्टिगत होता है। हम परम्परागत चित्रों में राजस्थानी, मुगल एवं ब्रिटिश कालीन प्रभाव दिखाई देता है। बनारस के भित्तिचित्रकार जिन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया था, उन्होंने बनारस की परम्परागत जातीय अस्मिता को भित्तिचित्रों के माध्यम से सुरक्षित रखने का प्रयास किया है।

उज्जैन

बाणभट्ट ने 'कादम्बरी' में भित्तिचित्र का उल्लेख किया है। इस नगर की अनेक भित्तियों पर सुन्दर चित्रांकन किया गया था। उज्जैन के निकवर्ती स्थानों से भी चित्रकला के उद्धरण प्राप्त होते है। राजमाता बाईजा बाई सिंधिया का महल वास्तुकला का सर्वोत्तम उदाहरण था भित्ति–चित्र कला के अनुपम उदाहरण इस महल में विद्यमान थे। 1925 की भीषण आग में कला–वैभव का यह केन्द्र स्वाहा हो गया। मालवा–मराठा कलम के भित्तिचित्र निर्माण दो प्रकार से किया गया, फ्रेस्को और टेम्परा दोनों ही शैलियों का प्रयोग हुआ है। उज्जैन में चित्रागार के मुख्य केन्द्र निम्नलिखित :–

अनादि कल्पेश्वर मंदिर

श्री महाकलेश्वर मंदिर के प्रांगण में अनादि कल्पेश्वर महादेव मंदिर है एवं गर्भगृह के द्वार पर अति जीर्णशीर्णावस्था में भित्तिचित्र है।

चिटनीस मंदिर

इस मंदिर में पैनल चित्र बने हैं। लगभग एक फीट की काष्ठ–पट्टिका पर भगवान शिव, कृष्ण व मराठा शासकों का चित्रण किया गया है। वर्षा का पानी से यहाँ के पैनल नष्ट हो रहे है।

श्री आष्टेवाले का राधा–कृष्ण मंदिर

लगभग सौ वर्ष पुराना यह भवन जर्जर अवस्था में है। टेम्परा शैली में बने यहाँ के चित्र अच्छी हालत में नहीं है।

श्री राम–जनार्दन मन्दिर

श्री राम मंदिर के चित्र फ्रेस्को शैली में बनाये गये हैं। श्री राम से सम्बन्धित चित्रों को बनाया गया है। उज्जैन के समस्त कला केन्द्र में चित्रित भित्तिचित्रों की पृष्ठभूमि लाल रंग की है। सीमा रेखा श्याम रंग में आंकी गई है। महीन से महीन रेखा भी अपनी लय बनाये हुये हैं, प्रतिवर्ष वर्षा से नष्ट हो रहे हैं। मालवा–मराठा शैली के दुर्लभ चित्र 18वी एवं 19वी शताब्दी की श्रेष्ठ रचना है।

अलवर

अलवर शहर अरावली पर्वत श्रेणियों में बसे होने कारण इसका नाम अलौर, अलूट और अलवर बोले जाते है। अलवर के चित्रकार डालूराम में भित्तिचित्रण सिद्धहस्तता थी। राजगढ़ के शीशमहल में भित्तिचित्र जो बने थे ये अलवर शैली के प्रारम्भिक सर्वोत्कृष्ट सुन्दर चित्र है। इससे विभिन्न रंगों के शीशों की जुड़ाई के साथ ही ओलिया एवं नीचे दिवारों पर भित्तिचित्रण विशेष दर्शनीय है। जालियों से नीचे समस्त दिवार बेल–बूटों और चित्रों से आवेष्ठित हैं और कही–कही चित्र भी बने है। इनका विषय संगीत

आदि है। राजपूत शैली का स्थापत्य और अजन्ता में भी नीले, हरे और लाल रंगों में थोड़ा उभार देकर चित्रित किये गये है।

महाराजा विनय सिंह जी अलवर के राजाओं में सर्वाधिक कलाप्रेमी एवं कला पारखी हुये है। इनके समय में ही निर्मित दीवान जी की हवेली में रंगमहल, शीशमहल, भित्तिचित्रण की दृष्टि से विशेष दर्शनीय है। अलवर शैली की उत्पत्ति, विकास और उन्नति पूर्णतया यहाँ की राजनैतिक परिस्थितियों के अनुकूल ही बनती–बिगड़ती रही। ईरानी मुगल शैली और राजस्थानी का संतुलित समन्वय देखने को मिलता है। ये भावाभिव्यक्ति, रागात्मकात और लोक कलात्मकता से युक्त है। अलवर शैली इस प्रकार राजस्थानी चित्रकला की एक अमर धरोहर है, जिसकी उपलब्धि देश–विदेश के अनेक राजकीय एवं व्यक्तिगत संग्रहालयों में विपुलता से आज भी प्राप्त होती है।

दक्षिण भारत की भित्ति चित्रकला

पिछले कुछ वर्षों के दौरान दक्षिण भारत के श्री रंगम नगर में बने श्री रंग मंदिर में हुये संरक्षण के दौरान मंदिर में जलने वाले घी, तेल के धुंए एवं कपूर की कालिख के नीचे से सदियों पुरानी चित्राकर्षक एवं विभिन्न चटक रंगों से युक्त भित्तिचित्र खोज निकाले गये हैं। ये चित्र विभिन्न कथानको के ऊपर आधारित है जो उस समय की मान्यताओं को दर्शाते है।

श्री रंगम के अतिरिक्त यह भित्ति चित्रकला तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर के विशाल प्रांगण में बने एक हजार फुट लंबे बरामदे की भित्तियों पर भी दृष्टिगोचर होती है। यहीं पर पार्वती मंदिर, मराठा दरबार में बने हुये भित्तिचित्र न केवल तत्कालीन धार्मिक मान्यताओं का बोध कराते हैं बल्कि तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का बोध भी कराती हैं। दक्षिण भारत में स्थित रामेश्वरम, नामक तीर्थस्थल पर बने मुख्य मंदिर में बने हुये विश्व के सबसे लम्बे बरामदों की छतों पर बनाये हुये भित्तिचित्र आज हमें तत्कालीन चित्रकला के प्रति मंदिर निर्माताओं की रूचि को दर्शाते हैं।

दक्षिण का सांस्कृतिक नगर मदुरई मीनाक्षी मंदिर के लिये प्रसिद्ध है। इसकी दीवारों, मंडपों और गलियारों की छतों पर अद्‌भुत रंगों के संयोजनों से विभिन्न धार्मिक एवं राजनैतिक कथानकों से सजाया गया है। मीनाक्षी मंदिर के चित्र एक ही कथानक को दर्शाने के बावजूद प्रत्येक चित्र अपनी अलग–अलग पहचान बनाये हुये हैं। चित्रों में चटख रंगों का काफी प्रयोग हुआ है। देवी–देवताओं एवं राजाओं के आभूषणों को दर्शाने के लिये शुद्ध स्वर्ण के वर्कों का प्रयोग किया गया है। भित्तिचित्रों में रंगों का संयोजन एवं कथानकों की प्रस्तुति राजस्थान के फड़शैली चित्रों की स्मृति को ताजा कर देती है। दक्षिण भारत के मंदिरों के अतिरिक्त अन्य कई मंदिर ऐसे है जिन्हें हम अज्ञानवश नष्ट होने दे रहे है। आवश्यकता इस बात की है हम विरासत में मिली इस अनमोल देन को सहेज कर रखें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रूप शिल्प – अजन्ता की चित्रकला – डॉ0 डी0 मिश्रा, डॉ0 घोष, कु0 संगीता
2. बनारस की भित्ति चित्र – हरी शंकर शर्मा
3. उज्जैन के भित्ति चित्र – श्री कृष्ण जोशी
4. दक्षिण भारत की भित्ति चित्र (स्वागत जून 1997) – डॉ0 एच0वी0 महेश्वरी (जैसल)

Copyright © 2017, Dr. Sunita Sharma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.